Scheme & Syllabi

of

M.A. (Indian Knowledge System)
Two-Years (Four Semesters)

(Under NEP-2020)

Department of Vedic Studies
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
Sagar (M.P.)

अधिष्ठाता/DEAN
School of Mathematical & Physical Science
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar
Chairman
Board of Studies
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

1. **Name of Programme** : M.A. in Indian Knowledge System

2. **Duration** : Two Year (Four Semester)

3. **Intake Capacity** : **20 Seats**

4. **Reservation Policy** : As per University rule.

5. **Eligibility** : Graduate in any discipline with 55% marks.

6. **Admission Procedure** : Though CUET-PG entrance test

7. **Examination Procedure:** The examination will be conducted as per other M.A. Programmes running in the university.

8. **Rules & Ordinance:** It will be governed by same University Ordinance applicable to other M.A. Programmes.

9. **Exit:** 1. After completion of one year the following degree will be provided:
   Diploma in Indian Knowledge System

   2. After completion of two years the following degree will be provided:
   Master of Arts (Indian Knowledge System)

10. **Fee Structure:** It will be same as passed by the fee committee for other M.A. Courses.

11. The M.A. (Indian Knowledge System) will be govern under the NEP-2020.

12. All other M.A. Programmes running in the university shall be mode of reference if and when such needed.

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

Department of Vedic Studies
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय, A CENTRAL UNIVERSITY)

M.A. (Indian Knowledge System)

Scheme of M.A. (Indian Knowledge System) program and syllabi for Sem I, II, III & IV (Under NEP-2020)

Sem –I

Paper Code	Title of Paper	Credit	Content Hours
DVS-DSM -121	भारतीय ज्ञान परम्परा के स्रोत	4	60
DVS- DSM - 122	भारतीय दर्शन परम्पराः सामान्य परिचय	4	60
DVS-DSM -123	भारतीय स्वास्थ्य विज्ञान	4	60
DVS-MDM-121	भारतीय गणित परम्परा	4	60
DVS-SEC-121	सांख्य–योग तन्त्र	4	60

Sem – II

Paper Code	Title of Paper	Credit	Content Hours
DVS-DSM -221	तर्कभाषा	4	60
DVS-DSM -222	गीता में आत्म प्रबंधन एवं अवसाद निवारण	4	60
DVS-DSM-223	भारतीय गणित परंपरा II	4	60
DVS-MDM-221	भारतीय योग परंपरा	4	60
DVS-SEC-221	वैदिक साहित्य द्वितीय	4	60

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya
Sagar, (M.P.)

Department of Vedic Studies
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
DOCTOR HARISINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M.P.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय, A CENTRAL UNIVERSITY)

M.A. (Indian Knowledge System)

Sem –III

Paper Code	Title of Paper	Credit	Content Hours
DVS-DSM-321	संस्कृत परिचय	4	60
DVS- DSM-322	भारतीय गणित परंपरा III	4	60
DVS-DSM-323	रसायन और धातु विज्ञान	4	60
DVS-SEC-321	प्रायोगिक कार्य (Project)	4	60
DVS-MDM-321	भारतीय कलाएं	4	60

Sem – IV

Paper Code	Title of Paper	Credit	Content Hours
DVS-DSM-421	भारतीय गणित परम्परा IV	4	60
DVS-DSM-422	प्रमाण सिद्धांत	4	60
DVS-DSM-423	भारतीय काल गणना	4	60
DVS-MDM-421	भारतीय संस्कृति	4	60
DVS-SEC-421	प्रायोगिक कार्य (Project)	4	60

Chairman Board of Studies (BoS) 20/02/2025
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-121	भारतीय ज्ञान परम्परा के स्रोत	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य – (Objectives):

(1) – वैदिक साहित्य का विस्तृत अध्ययन

(2) – वेदाड्ग साहित्य का विस्तृत अध्ययन

(3) – पुराण, न्याय, मीमांसा एवं धर्मशास्त्र विषयक परिचय

(4) – भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) - इकाई–1 के अन्तर्गत ज्ञान के 14 स्त्रोतों की जानकारी।

(UO-2) - इकाई–2 के अन्तर्गत पुराण, न्याय मीमांसा, धर्मशास्त्र की विशेष जानकारी।

(UO-3) - इकाई–3 के अन्तर्गत वैदिक साहित्य एवं वेदाङग परम्परा का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4) - इकाई–4 के अन्तर्गत पुराण के पाँच लक्षणों के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5) - भारतीय ज्ञान परम्परा के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन

Unit - I	चतुर्दश विद्यास्थान
Unit - II	वैदिक साहित्य एवं वेदाङग परम्परा
Unit - III	पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र सामान्य परिचय
Unit - IV	'पुराणं पंचलक्षणम्'
Unit - V	भारतीय ज्ञान परम्परा का महत्व

Reference/Text Book.

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास श्री बल्देव उपाध्याय।

2– वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास श्री उमाशंकर शर्मा, 'ऋषि'।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studics
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem-I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-122	भारतीय दर्शन परम्पराः सामान्य परिचय	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - दर्शन की अवधारणा का सामान्य अध्ययन

(2) - भारतीय दर्शनों का वर्गीकरण

(3) - भारतीय दर्शन परम्परा के विविध मतों का सामान्य परिचय

(4) - तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं आचार मीमांसा का अध्ययन

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 - इकाई–1 के अन्तर्गत दर्शन की अवधारणा का अध्ययन एवं आस्तिक, नास्तिक दर्शनों के वर्गीकरण की समझ।

UO-2 - नास्तिक दर्शनों का सामान्य परिचय (चार्वाक, जैन एवं बौद्ध)।

UO-3 - आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत न्याय – वैशेषिक दर्शन की तत्व, ज्ञान एवं आचार मीमांसा का ज्ञान।

UO-4 - सांख्य–योग दर्शन की तत्व, ज्ञान एवं आचार मीमांसा का ज्ञान।

UO-5 - पूर्व मीमांसा उत्तर मीमांसा दर्शन की तत्व ज्ञान एवं आचार मीमांसा।

Unit - I	दर्शन शब्द परिचयः व्युत्पत्ति एवं वर्गीकरण
Unit - II	चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - III	न्याय–वैशेषिक दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - IV	सांख्य–योग दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - V	पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा दर्शन का सामान्य परिचय

Reference/Text Book.

1– Introduction to Indian Philosophy, Dutta and Chaterjee.

2– 'भारतीय दर्शन', आचार्य चन्द्रधर शर्मा।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-123	भारतीय स्वास्थ्य विज्ञान	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - आयुर्विज्ञान की भारतीय पद्धतियों का परिचय

(2) - योग और आयुर्विज्ञान का अन्तः सम्बन्ध

(3) - जनजातीय चिकित्सा पद्धतियों का प्रयोग

(4) - आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्त

इकाईशः शिक्षण अधिगम **(Unit wise learning outcomes)**

UO-1 – इकाई 1 के अध्ययन से चिकित्सा की भारतीय एवं स्थानीय पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

UO-2 – इकाई 2 के अध्ययन से आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त होगी।

UO-3 – इकाई 3 के अध्ययन से सिद्ध एवं योग चिकित्सा पद्धति का ज्ञान प्राप्त होगा।

UO-4 – इकाई 4 के अध्ययन से जनजातीय चिकित्सा पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त होगा।

UO-5 – इकाई 5 के अध्ययन से समेकित रूप से भारतीय ज्ञान परम्परा का माहात्म्य प्रतिपादित होगा।

Unit - I	भारतीय आयुर्विज्ञान पद्धति में आयुर्वेद, सिद्ध, योग एवं जनजातीय चिकित्सा पद्धतियॉं
Unit - II	आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्त त्रिगुण, त्रिदोष, महाभूत, त्रयोदषग्नि, सप्तधातु, त्रिमल
Unit - III	सिद्ध चिकित्सा पद्धति एवं योग द्वारा रोग निवारण एवं दीर्घायु
Unit - IV	जनजातीय चिकित्सा पद्धतियॉं एवं चिकित्सकीय वनस्पति (तुलसी, नीम, गुग्गलू इत्यादि)
Unit - V	भारतीय ज्ञान परम्परा में चिकित्सा पद्धतियों का महत्व

Reference/Text Book.

1– चरक संहिता, डॉ. रामतीर्थ शर्मा, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।

2– शरीर क्रिया विज्ञान, डॉ. सुनील वर्मा, प्रो. जयराम, चौखम्भा ओरियण्टालिया।

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-121	भारतीय गणित परम्परा	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) - भारतीय गणित परम्परा के महत्व का ज्ञान

(2) - आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य का भारतीय गणित को योगदान का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – वैदिक साहित्य में वर्णित ज्यामिति एवं बोधायन प्रमेय का ज्ञान।

UO-2 – आर्यभट्ट विरचित आर्यभटीयम ग्रंथ का अध्याय क्रम संयोजन एवं अंकगणित के उपयोग का अध्ययन।

UO-3 – भास्कराचार्य कृत लीलावती का परिचय एवं लीलावती में वर्णित गुणन की विधियों का ज्ञान।

UO-4 – परिधि–व्यास के अनुपात पर भारतीय गणितज्ञों का योगदान एवं पाई (π) नामकरण के विषय में अध्ययन।

UO-5 – भारतीय गणित परम्परा का ज्ञान।

Unit - I	शुल्वसूत्रों में वर्णित ज्यामिति, बोधायन–पाइथागोरस प्रमेय
Unit - II	आर्यभटीयम सामान्य परिचय एवं आर्यभटीयम में अंकगणित का परिचय
Unit - III	लीलावती का परिचय लीलावती में गुणन की विविध विधियॉं का परिचय
Unit - IV	π(पाई) का अविष्कार एवं भारतीय योगदान (परिधि–व्यास अनुपात)
Unit - V	गणित को भारतीय विद्वानों का योगदान

Reference/Text Book.

1– चार शुल्वसूत्र, डॉ. रघुनाथ पुरूषोत्तम कुलकर्णी, महर्षि संदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान।

2– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।

3– लीलावती, पं. सीताराम शुक्ल, मोतीलाल बनारसी दास।

Essential e-resourses:

1. Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem I

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-121	सांख्य–योग तन्त्र	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

(1) – सांख्य एवं योग दर्शन का विशेष परिचय।

(2) – सांख्यकारिका एवं योगसूत्र की चयनित कारिकाओं एवं सूत्रों का अध्ययन।

(3) – सांख्य एवं योग दर्शन के विविध सिद्धान्तों का अध्ययन।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – इकाई – 1 के अध्ययन से त्रिविध दुख (आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक) का स्वरूप एवं निवारण का अध्ययन।

UO-2 – इकाई – 2 के अध्ययन से प्रकृति एवं पुरूष के स्वरूप का परिचय।

UO-3 – इकाई – 3 के अध्ययन से सांख्य एवं योग का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त होगा।

UO-4 – इकाई – 4 के अध्ययन से योग के अंगों का ज्ञान प्राप्त होगा।

UO-5 – इकाई – 5 के अध्ययन से सांख्य व योग के प्रमुख सिद्धातों सत्कार्यवाद, पुरूषख्याति आदि सिद्धान्तों का ज्ञान।

Unit - I	सांख्य कारिका–त्रिविध दुख एवं उनका निवारण
Unit - II	प्रकृति एवं पुरूष का परिचय, सृष्टि प्रकिया पंचीकरण
Unit - III	सांख्य दर्शन की तत्व मीमांसा एवं योग की तत्व मीमांसा की तुलना
Unit - IV	अष्टांग योग पातंजल योग दर्शन का सामान्य परिचय
Unit - V	सत्कार्यवाद, पुरूषख्याति, समाधि के प्रकार

Reference/Text Book.

1– भारतीय दर्शन, चन्द्रधर शर्मा, न्यू ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

2– Introduction to Indian Philosophy, Dutta and Chaterjee.

Board of Studies (EoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-221	तर्कभाषा	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. तर्कभाषा ग्रन्थ के चयनित विषयों का अध्ययन।
2. न्याय दर्शन में पदार्थ विषयक का ज्ञान।
3. न्याय दर्शन में प्रमाण एवं तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का ज्ञान ।

इकाईशः शिक्षण अधिगम **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1)- तर्कभाषा का सामान्य परिचय का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2)- तर्कभाषा में वर्णित पदार्थों का नाम एवं उनके लक्षण का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-3)- तर्कभाषा में प्रमाण के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4)- प्रत्यक्ष प्रमाण के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5)- तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई - 1	तर्कभाषा का विस्तृत परिचय
इकाई - 2	तर्कभाषा में वर्णित पदार्थों का विस्तार पूर्वक वर्णन ।
इकाई - 3	तर्कभाषा में प्रमाण का स्वरूप ।
इकाई - 4	प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप एवं लक्षण का विवेचन
इकाई - 5	तर्कभाषा में वर्णित हेत्वाभास का विवेचन

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. तर्कभाषा ,श्रीनिवास शास्त्री ,चौखम्भा प्रकाशन।

2. तर्कभाषा ,बद्रीनाथ शुक्ल ,मोतीलाल बनारसीदास।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM -222	गीता में आत्म प्रबंधन एवं अवसाद निवारण	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. गीता अध्याय 3 का श्लोक सं. 42 एवं अध्याय 15 का श्लोक–7 का विशेष अध्ययन करना।
2. गीता अध्याय 2-3 एवं 4 से मन का अध्ययन करना।
3. त्रिगुण सिद्धांत की जानकारी।
4. अंतर्द्वन्द की प्रकृति का अध्ययन एवं निवारण।
5. गीता द्वारा आदर्श व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा।

इकाईशः शिक्षण अधिगम **(Unit wise learning outcomes)**

(UO-1) गीता अध्ययन से इंद्रिय ,मन ,बुद्धि ,आत्म तत्व की कमिक श्रेष्ठता का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-2) मन विषयक अध्ययन करना।

(UO-3) त्रिगुण सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त करना।

(UO-4) अंतर्द्वन्द की प्रकृति एवं उसके निवारण का अध्ययन करना।

(UO-5) गीता के अध्ययन से आदर्श जीवन व व्यक्तित्व का अध्ययन।

इकाई - 1	इन्द्रिय ,मन ,बुद्धि ,आत्मतत्व का स्वरूप विवेचन अध्याय 3-42 अध्याय 15-7
इकाई - 2	मन विषयक विविध अवधारणाएँ ,मन के नियंत्रण उपाय 2-3 अध्याय-4
इकाई - 3	त्रिगुण का सिद्धान्त-XII-5-6, XIV-5-8, 11-1, XIV-17
इकाई - 4	अन्तर्द्वन्द्व की प्रकृति और उसका निवारण I-1, IV-16, I-45, II-6
इकाई - 5	गीता द्वारा आदर्श व्यक्तित्व निर्माण।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. गीताप्रेस, स्वामी रामसुखदास, गीताप्रेस गोरखपुर

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/02/2025

M.A. (Indian Knowledge System) Sem II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-223	भारतीय गणित परम्परा II	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

1 –भारतीय गणितीय प्रणालियों और संख्यात्मक पद्धतियों की मूलभूत समझ विकसित करना।

2 –विभिन्न अंकगणितीय प्रणालियों, जैसे आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि पद्धतियों का विश्लेषण करना।

3 –आर्यभट्ट की साइन–टेबल, माधव श्रृंखला और करणपद्धति जैसी त्रिकोणमितीय तकनीकों को समझना।

4 –ब्रह्मगुप्त के गणितीय योगदानों, जैसे धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य संख्याओं के गुणों, रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल, तथा चक्रीय चतुर्भुज की अवधारणा को अध्ययन करना।

5 –कुट्टक विधि और उसके अनुप्रयोगों को आर्यभट्ट एवं ब्रह्मगुप्त के संदर्भ में समझना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – दशमलव स्थान मान प्रणाली और वेदों में संख्याओं की अवधारणा को समझना। बड़ी संख्याओं (कोटि से महा–औघ, अक्षौहिणी आदि) की गणना की प्रक्रिया को सीखना।

UO-2 – आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियों के मूलभूत सिद्धांतों की तुलना और विश्लेषण करना।

UO-3 – आर्यभट्ट की साइन–टेबल, तंत्रसंग्रह में संशोधन, माधव श्रृंखला और करणपद्धति से साइन व कोसाइन मान प्राप्त करने की विधियों को समझना।

UO-4 – ब्रह्मगुप्त के गणितीय योगदान, जैसे धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य संख्याओं की विशेषताएँ, रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल, तथा चक्रीय चतुर्भुज की अवधारणा को समझना।

UO-5 – कुट्टक विधि की प्रक्रियाओं को समझना और आर्यभट्ट एवं ब्रह्मगुप्त द्वारा प्रस्तावित कुट्टक विधियों के अनुप्रयोगों का विश्लेषण करना।

इकाई – 1	दशमलव स्थान मान प्रणाली –वेदों में संख्याएँ, पारंपरिक साहित्य से बड़ी संख्याओं (कोटि से महा–औघ, अक्षौहिणी और अन्य नामित अंक) की गणना।
इकाई – 2	अंकगणित की तीन अलग–अलग प्रणालियाँ – आर्यभट्ट, भूतसंख्या और कटपयादि प्रणालियाँ
इकाई – 3	आर्यभट्ट की साइन–टेबल, तंत्रसंग्रह में इसका संशोधन, साइन और कोसाइन कार्यों के लिए माधव श्रृंखला, करणपद्धति से साइन मान प्राप्त करने की विभिन्न विधियाँ ।
इकाई – 4	ब्रह्मगुप्त– धनात्मक, ऋणात्मक और शून्य का गणित। रैखिक और द्विघात समीकरणों का हल। चक्रीय चतुर्भुज।
इकाई – 5	कुट्टक– आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त द्वारा कुट्टक विधि।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।

2– बी. दत्ता और ए. एन. सिंह, हिंदू गणित का इतिहास, 2 भाग, पुनर्मुद्रण, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

3– ए. के. बाग, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में गणित, चौखंभा, वाराणसी, 1979 ।

4– सी. एन. श्रीनिवास अयंगर, भारतीय गणित का इतिहास, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967 ।

Essential e-resourses:

2. Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

Chairman 20/02/2025

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-221	भारतीय योग परंपरा	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. पतंजलि योगसूत्र के सूत्रों का अध्ययन करना।
2. योग के प्रकार का अध्ययन।
3. गीता मे योग विषयक सिद्धांतों की जानकारी।
4. योगियों के जीवन मे योग की भूमिका की जानकारी प्राप्त करना।
5. योग के द्वारा रोग के निवारण की जानकारी।

इकाईशः शिक्षण अधिगम)Unit wise learning outcomes)

(UO-1) योग-सूत्र के सूत्रों का व्यावहारिक ज्ञान के रूप में प्रयोग करना।
(UO-2) विभिन्न प्रकार के योग की चर्चा करना।
(UO-3) गीता में योग की महत्ता को समझना
(UO-4) योगियों के जीवन परिचय को जानना।
(UO-5) योग चिकित्सा की जानकारी प्राप्त करना।

इकाई - 1	पतंजलि योग सूत्र (अष्टांग योग, चित्त, चित्त विक्षेप, कर्म, चित्तप्रसादन, समाधि, ईश्वर)
इकाई - 2	योग के प्रकार – कर्मयोग, ज्ञान योग, हठयोग आदि।
इकाई - 3	गीता में योग
इकाई - 4	जीवन परिचय – महर्षि पतंजलि, महर्षि रमन, रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द।
इकाई - 5	योग चिकित्सा – मोटापा, अवसाद, तनाव, BP, PCOD, अस्थमा।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. योग दर्शन - महर्षि पतञ्जलिकृत, गीताप्रेस गोरखपुर।
2. योग एवं यौगिक चिकित्सा , प्रो० रामहर्ष सिंह, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem II

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-221	वैदिक साहित्य द्वितीय	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) वैदिक सूक्तों एवं संवादों का परिचय कराते हुए वैदिक साहित्य के विषयों का प्रतिपादन करना ।

(2) वैदिक सूक्त- अग्नि, वरुण, सूर्य के चयनित मंत्रों का अनुवाद एवं वर्तमान संदर्भ में इनका महत्व को समझना।

(3) वैदिक सूक्त- शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से उनके महत्व को समझना।

(4) वैदिक सूक्त- संज्ञान सूक्त का समानतः के महत्व को समझना।

(5) वैदिक सूक्त- हिरण्यगर्भ, पुरुष सूक्त के अध्ययन से सृष्टि उत्पत्ति के मूल तत्व को समझना ।

इकाईः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- वैदिक सूक्तों एवं संवाद सूक्तों का सामान्य परिचय प्राप्त होगा ।

(UO-2) अग्नि, वरुण एवं सूर्य सूक्त के चयनित मंत्रों का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-3) शिवसंकल्प सूक्त का मनोवैज्ञानिक महत्व एवं मन की शक्ति का परिचय प्राप्त होगा।

(UO-4) संज्ञान सूक्त के माध्यम से सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्रों का परिचय प्राप्त होगा ।

(UO-5) सृष्टि उत्पत्ति मूल विषयक तत्वों का परिचय प्राप्त होगा ।

Unit -1	वैदिक साहित्य का सामान्य परिचय, सूक्तों एवं संवाद सूक्तों की परंपरा का परिचय
Unit-2	अग्नि, वरुण,सूर्य सूक्तों का परिचय एवं मंत्रशः अध्ययन ।
Unit-3	शिवसंकल्प सूक्त,मंत्र अध्ययन, मन की शक्ति एवं मन का महत्व ।
Unit-4	संज्ञान सूक्त मंत्र अध्ययन, सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्रों का प्रतिपादन
Unit -5	हिरण्यगर्भ सूक्त एवं पुरुष सूक्त- मंत्र अध्ययन, सृष्टि उत्पत्ति मूल विषयक तत्वों का प्रतिपादन

<u>संदर्भ/सहायक ग्रंथ</u>:

वैदिक संग्रहः, लेखक- डॉ कृष्ण लाल , प्रकाशन- परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली

वेदवल्लरी- लेखक – डॉ श्रीमती पुष्पा गुप्ता, प्रकाशन – ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली ।

20/2/25 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-321	संस्कृत परिचय	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) – माहेश्वर सूत्र का अध्ययन ।

(2) – स्त्रीलिंग, पुल्लिंग का मूलभूत समझ विकसित करना ।

(3) – शब्द रूप का विस्तार पूर्वक अध्ययन ।

(4) – हलन्त स्त्रीलिंग, हलन्त पुल्लिंग का सामान्य अध्ययन

(5) – सर्वनाम का अध्ययन

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) – माहेश्वर सूत्र – प्रत्याहार, व्यंजन, उच्चारण, स्थान, की अवधारणा को समझना

(UO-2) – शब्द रूप, पुल्लिंग -देव , राम, कवि, गुरु, पितृ, स्त्रीलिंग- मति, धेनु, मातृ, लता, नदी की अवधारणा को समझना

(UO-3) – शब्द रूप का विस्तृत अध्ययन ।

(UO-4) – हलन्त पुल्लिंग , हलन्त नपुंसकलिंग का विस्तृत समझ ।

(UO-5) – सर्वनाम – अस्मद, युष्यद, तद् का विस्तृत अध्ययन ।

इकाई - 1	माहेश्वर सूत्र, प्रत्याहार, स्वर ,व्यंजन, उच्चारण, स्थान I
इकाई - 2	शब्द रूप, पुल्लिंग -देव, राम, कवि, गुरु, पितृ, स्त्रीलिंग - मति , धेनु , मातृ, लता, नदी ।
इकाई - 3	शब्द रूप - हलन्त पुल्लिंग, महत्, राजन् , आत्मन्, बहमन्।
इकाई - 4	हलन्त स्त्रीलिंग – वाच्, सरित , लक्ष्मी हलन्त नपुंसकलिंग – जगत्, मनस्, बहमन्, नामन्।
इकाई - 5	सर्वनाम – अस्मद, युष्मद , तद् ।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. लघुसिद्धांत कौमुदी ,डॉ सत्यपाल सिंह , शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
2. रचनानुवाद कौमुदी ,डॉ कपिलदेव द्विवेदी ,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

DShukla
Shivamkhare 20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-322	भारतीय गणित परम्परा III	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य (Objectives):

1 – लीलावती में वर्णित अंकगणितीय संक्रियाओं और बीजगणितीय विधियों की मूलभूत समझ विकसित करना। समतल आकृतियों, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त, और गोले से संबंधित गणितीय अवधारणाओं और उनके अनुप्रयोगों का अध्ययन करना।
2 – भास्कराचार्य की बीजगणितीय विधियों और उनके गणितीय योगदानों को समझना।
3 – सतत भिन्न (ब्वदजपदनमक थ्तंबजपवदे) की अवधारणा और भारतीय गणित में वल्ल्युपसंहार विधियों का विश्लेषण करना।
4– केरल स्कूल के योगदान, विशेष रूप से π के लिए माधव श्रृंखला, अनंत श्रेणियों और उनके अभिसरण विधियों का अध्ययन करना।
5– नारायण पंडित की गणित कौमुदी में प्रस्तुत गणितीय विधियों को समझना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – लीलावती में अंकगणितीय संक्रियाओं, व्युत्क्रम विधि, अनुमान के नियम, और द्विघात समीकरणों के हल की प्रक्रिया को समझना। समतल आकृतियों, समकोण त्रिभुजों, चतुर्भुजों, और वृत्त से संबंधित ज्यामितीय अवधारणाओं का अध्ययन करना तथा π और गोले के क्षेत्रफल व आयतन की गणना की विधियों को समझना।
UO-2 – भास्कराचार्य के बीजगणितीय योगदानों का विश्लेषण करना और उनके गणितीय सिद्धांतों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना।
UO-3 – सतत भिन्नों की अवधारणा, वल्ल्युपसंहार विधि, करणपद्धति, और दृक्करण में निकटतम–पूर्णांक सतत भिन्न की गणना को समझना।
UO-4 – केरल स्कूल द्वारा विकसित π की माधव श्रृंखला, पुतुमना–सोमायाजी श्रृंखला, और अनंत ज्यामितीय श्रृंखला के योग की धारणा का विश्लेषण करना।
UO-5 – नारायण पंडित की गणितकौमुदी में प्रस्तुत गणितीय विधियों और उनके प्रभाव को समझना।

इकाई – 1	लेलावती– अंकगणितीय संक्रियाएँरू व्युत्क्रम विधि, अनुमान का नियम। द्विघात समीकरणों का हल। मिश्रण, संयोजन, प्रगति। समतल आकृतियाँ – समकोण त्रिभुजों का अनुप्रयोग, सूसी समस्याएँ। चतुर्भुज का निर्माण, चक्रीय चतुर्भुज, π का मान, वृत्त का क्षेत्रफल, गोले का पृष्ठीय क्षेत्रफल, गोले का आयतन।
इकाई – 2	भास्कराचार्य की बीजगणित
इकाई – 3	सतत भिन्न– वल्ल्युपसंहार और सतत भिन्न, वल्ल्युपसंहार विधि ब और प्, करणपद्धति। दृक्करण में निकटतम–पूर्णांक सतत भिन्न।
इकाई – 4	केरल स्कूल π के लिए माधव श्रृंखला। अंत–सुधार (अंत्यसंस्कार), π के लिए अलग–अलग तेज अभिसरण श्रृंखला, पुतुमना–सोमायाजी श्रृंखला, π की अतार्किकता पर नीलकंठ, नीलकंठ और अनंत ज्यामितीय श्रृंखला के योग की धारणा।
इकाई – 5	नारायण पंडित की गणितकौमुदी

संदर्भ/पाठ्य पुस्तक

1– आर्यभटीयम, आचार्य आर्यभट्ट, चौखम्भा प्रकाशन, बाराणसी।
2– बी. दत्ता और ए. एन. सिंह, हिंदू गणित का इतिहास, 2 भाग, पुनर्मुद्रण, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।
3– ए. के. बाग, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में गणित, चौखंभा, वाराणसी, 1979 ।
4– सी. एन. श्रीनिवास अयंगर, भारतीय गणित का इतिहास, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967

Essential e-resourses:

1. Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies

M.A. (Indian Knowledge System) Sem III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-323	रसायन और धातु विज्ञान	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

(1) दर्शन के अंतर्गत रसायन शास्त्र के सिद्धांत का अध्ययन

(2) सांख्य पातंजल प्रणाली के रसायन और धातु विज्ञान का सम्मान परिचय

(3) प्राचीन भारत के आयु विज्ञान का अध्ययन

(4) आयुर्विज्ञान में रासायनिक योग का विस्तृत अध्ययन

(5) वेदान्त बौद्धों एवं जैनों के परमाणु सिद्धांत का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- न्याय वैशेषिक रसायन शास्त्र सिद्धांत की समझ ।

(UO-2)- सांख्य पातंजल प्रणाली का ज्ञान

(UO-3)- प्राचीन भारत के आयुर्विज्ञान में रसायन विज्ञान का अध्ययन ।

(UO-4)- आयुर्विज्ञान रसायनिक योग में आण्विक गुण रंगों का गुणधर्म आदि का ज्ञान ।

(UO-5)- वेदांत के दृष्टिकोण से पदार्थ एवं बौद्ध एवं जैनों के परमाणु सिद्धांत का ज्ञान ।

Unit -1	न्याय वैशेषिक रसायन शास्त्र सिद्धांत, परमाणु संयोजन का सिद्धांत
Unit-2	सांख्य पातंजल प्रणालीः प्रकृति मूल घटक एवं उनके अन्तः क्रियाएं , ऊर्जा का संरक्षण एवं ऊर्जा का रूपांतरण मूलभूत परमाणु इकाई ।
Unit-3	प्राचीन भारत के आयुर्विज्ञान में रसायन विज्ञान, बृहत संहिता में वज्रलेप/ वज्रसंघात बनाना : गंध युक्ति
Unit-4	पंचीकरण का सिद्धांत, रस रत्न समुच्चय में वर्णित जस्ता आसवन, अम्ल और क्षार अवधारणा ।
Unit -5	बौद्धों एवं जैनों का परमाणु सिद्धांत।

Reference / Text Book

1. दर्शन शास्त्र की परम्परा में भौतिक विज्ञान – डॉ. सुदुम्न आचार्य ।
2. A History of Hindu Chemistry – Praphulla Chandra Ray.

DShukla
Chairman
Shivamkhare 20/02/2025
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-321	प्रायोगिक कार्य (Project)	0	0	4	0	20	20	60	100

Practicals (or project) as decided by the course coordinators.

Chairman
Board of Studies (BOS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem III

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-321	भारतीय कलाएं	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. भारतीय नाट्य-शास्त्र अभिनय दर्पण का परिचय
2. नवरस का अध्ययन
3. भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय
4. UNESCO की ICH सूची में प्रतिनिधित्व करने वाली विधाओं और त्यौहारों का अध्ययन।
5. क्षेत्रीय अभिमंच का परिचय।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) इकाई 1-भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का सामान्य परिचय

(UO-2) नवरस का अध्ययन

(UO-3) इकाई 3-के अनुसार भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय।

(UO-4) इकाई 4-के अनुसार UNESCO की ICH सूची में उपस्थित भारतीय कला और त्यौहारों का नामांकन

(UO-5) इकाई 5-के अनुसार क्षेत्रीय मंचकला का अध्ययन।

इकाई - 1	भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का परिचय
इकाई - 2	नवरस का वर्णन
इकाई - 3	आठ भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय-भरतनाटयम मोहिनीअट्टम ,कथाकली ,कुचिपुड़ी , कथक ,ओडिसी,मणीपुरी एवं सात्रिय
इकाई - 4	UNESCO की ICH सूची में प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय कला विधाओं तथा सांस्कृतिक त्यौहारों का वर्णन नामांकन प्रक्रिया का महत्व।
इकाई - 5	क्षेत्रीय मंचकला अभिनय का परिचय कुड़ीअट्टम ,यक्षगान ,जत्रा लैहारोवा ,टोय्यम अकियनात ,पांडवानी , चिंदू , भागवत भांड ,जानना और अन्य पारंम्पारिक ग्रंथों का कला विधाओं का प्रभाव।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय कला, उदयनारायण राय, लोक भारती प्रकाशन।
2. भारतीय कला, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृथ्वी प्रकाशन।

20/02/2025

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya

M.A. (Indian Knowledge System) Sem IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-421	भारतीय गणित परम्परा IV	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य **(Objectives):**

1 – शास्त्र में द्विआधारी (Binary) गणित और संयोजन संबंधी समस्याओं की अवधारणा को समझना।

2 – बक्षाली पांडुलिपि और महावीर के गणितसारसंग्रह के गणितीय योगदानों का अध्ययन करना।

3– संचय (Combinatorics) विज्ञान के ऐतिहासिक विकास और भारतीय गणित में इसके योगदान को समझाना

4– भारत में मैजिक स्क्वायर की अवधारणा और इसके ऐतिहासिक तथा गणितीय महत्व को समझना।

5– श्रीनिवास रामानुजन के जीवन, गणितीय करियर, प्रकाशित कार्यों और उनके प्रभाव का अध्ययन करना।

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

UO-1 – छंद शास्त्र में द्विआधारी (Binary) गणित और संचय की मूलभूत अवधारणाओं को समझना और उनकी गणितीय व्याख्या करना।

UO-2– महावीर की बक्षाली पांडुलिपि और महावीर के गणितसारसंग्रह के प्रमुख गणितीय योगदानों का विश्लेषण करना।

UO-3 – संचय (Combinatorics) के विकास को ऐतिहासिक और गणितीय दृष्टिकोण से समझना।

UO-4 – भारत में मैजिक स्क्वायर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और इसकी गणितीय संरचना को समझना।

UO-5 – श्रीनिवास रामानुजन के गणितीय सिद्धांतों, उनके प्रकाशित शोधपत्रों और गणितीय जगत में उनके प्रभाव का अध्ययन करना।

इकाई – 1	छंद शास्त्र में द्विआधारी (Binary) गणित और संचय संबंधी समस्याएं
इकाई – 2	बक्षाली पांडुलिपि और महावीर का गणितसारसंग्रह
इकाई – 3	संचय संबंधी (Combinatorics) विज्ञान का विकास
इकाई – 4	भारत में मैजिक स्क्वायर
इकाई – 5	श्रीनिवास रामानुजन (1887–1920)। रामानुजन के जीवन और गणितीय करियर की संक्षिप्त रूपरेखा, रामानुजन के प्रकाशित कार्यों की कुछ झलकियाँ और उनका प्रभाव

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1– बी. दत्ता और ए. एन. सिंह, हिंदू गणित का इतिहास, 2 भाग, पुनर्मुद्रण, भारतीय कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004।

2– ए. के. बाग, प्राचीन और मध्यकालीन भारत में गणित, चौखंभा, वाराणसी, 1979

3– सी. एन. श्रीनिवास अयंगर, भारतीय गणित का इतिहास, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1967

4– Bruce C. Berndt, "Ramamjan's Notebooks Part 1". Springer (1985).

Essential e-resourses:

Link- NPTEL :: Mathematics - Mathematics in India - From Vedic Period to Modern Times

20/2/25 20/02/2025

Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

20/2/25

M.A. (Indian Knowledge System) Sem IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-422	प्रमाण सिद्धांत	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. भारतीय दर्शनों में प्रमाण्य विषयक सिद्धान्तों का ज्ञान।
2. प्रमाण मीमांसा का ज्ञान।
3. विविध दार्शनिक सम्प्रदायों में प्रमाण्य विषयक मतों का ज्ञान।

इकाईशः शिक्षण अधिगम) Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- अध्ययन से प्रमाण विषयक व्यापक ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-2)- अध्ययन से चार्वाक ,जैन एवं बौद्ध दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-3)- अध्ययन से न्याय-वैशेषिक दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-4)- अध्ययन से सांख्य-योग दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

(UO-5)- अध्ययन से पूर्व मीमांसा-वेदान्त दर्शन की प्रमाण मीमांसा का ज्ञान प्राप्त होगा।

इकाई - 1	भारतीय दर्शन में प्रमाण का स्वरूप एवं अवधारणा प्रत्यक्ष ,अनुमान ,उपमान ,शब्द आदि।
इकाई - 2	चार्वाक ,बौद्ध एवं जैन दर्शनों में प्रमाण-मीमांसा
इकाई - 3	न्याय-वैशेषिक दर्शन में प्रमाण मीमांसा
इकाई - 4	सांख्य-योग दर्शन में प्रमाण मीमांसा
इकाई - 5	पूर्व मीमांसा-वेदान्त दर्शन में प्रमाण मीमांसा

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय दर्शन ,चन्द्रधर शर्मा ,न्यू ईस्टर्न बुक लिंकर्स।
2. Introduction to Indian Philosophy, Dutta and Chaterjee.

Dshukla
Chairman
Board of Studies (DoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.
20/02/2025

20/2/25

M.A. (Indian Knowledge System) Sem IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-DSM-423	भारतीय काल गणना	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. समय के मान ,विभाजन का सामान्य परिचय
2. तैत्तिरीय बाह्मण का अध्ययन
3. सामान्य समय गणना का ज्ञान
4. भारतीय कैलेण्डर प्रणाली के विषय में जागरूकता
5. राष्ट्रीय कैलेण्डर में विभिन्न संवत् का ज्ञान

इकाईशः शिक्षण अधिगम (Unit wise learning outcomes)

(UO-1) इकाई 1-के अनुसार समय के मान ,विभाजन ,वर्ष ,दिन का विस्तृत अध्ययन ।

(UO-2) इकाई 2-के अनुसार तैत्तिरीय ब्राह्मण का अध्ययन।

(UO-3) इकाई 3 के अनुसार सामान्य समय गणना चाँद ,दिवस ,शोवियन वर्ष विकम संवत् आदि का ज्ञान।

(UO-4) इकाई 4 के अनुसार पंचांग के 5 तत्व का ज्ञान।

(UO-5) इकाई 5 के अनुसार भारतीय कैलेण्डर में नक्षत्र ,दिनदर्शिका का ज्ञान।

इकाई - 1	समय के मान ,वेद के समय से विभाजन, वर्ष महीने और दिन।
इकाई - 2	तैत्तिरीय ब्राह्मण में 13 महीनों के नाम 12 ,अर्धमाहो के नाम, चन्द्र वर्ष के 354 दिन, महीने और अधिकमास।
इकाई - 3	सामान्य समय गणना के तरीके , चांद्र दिवस ,सौर दिवस ,सौर वर्ष ,चंद्र-सौर वर्ष, सावन दिन।
इकाई - 4	भारतीय कैलेण्डर प्रणाली पंचांग के 5 तत्व संगना ,नक्षत्र ,तिथि ,योग करण और वार
इकाई - 5	भारतीय कैलेण्डर में सूर्य-नक्षत्र ,सौर दिनदर्शिका (कैलेंडर), विक्रम संवत् और शक संवत-राष्ट्रीय कैलेंडर (राष्ट्रीय दिनदर्शिका)।

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय काल गणना का संक्षिप्त परिचय – ज्यो ० पंडित देवकीनन्दन खेडवाल , फतेहपुर राजस्थान ।

DShukla 20/2/25

Shivanipkare 20/02/2025

20/2/25

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour ...

M.A. (Indian Knowledge System) Sem IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-MDM-421	भारतीय संस्कृति	4	0	0	4	20	20	60	100

उद्देश्य - (Objectives)

1. भारतीय गुरुकुल प्रणाली का विस्तृत अध्ययन
2. वर्णशास्त्र का विस्तृत अध्ययन
3. पुरुषार्थ चतुष्टय का परिचय
4. श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन
5. धर्म के स्वरूप का महत्व ।

इकाईश शिक्षण अधिगम) Unit wise learning outcomes)

(UO-1)- भारतीय गुरूकुल प्रणाली की जानकारी।

(UO-2)- तर्कशास्त्र की सामान्य जानकारी।

(UO-3)- पुरुषार्थ चतुष्टय का ज्ञान।

(UO-4)- श्रीमद्भगवद्गीता का देवी और आसुरी संवत् का ज्ञान।

(UO-5)- धर्म के स्वरूप को जानना ।

इकाई - 1	प्राचीन-भारतीय गुरुकुल प्रणाली नालंदा ,तक्षशिला ,विक्रमशिला आदि का सामान्य परिचय
इकाई - 2	तर्कशास्त्र
इकार्ड - 3	पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ ,काम ,मोक्ष) का विस्तृत वर्णन
इकाई - 4	श्रीमद्भगवदगीता अध्याय स 16 .देवी और आसुरी संवत्।
इकाई - 5	धर्म का स्वरूप-महाभारत ,मनुस्मृति-वैशेषिक सूत्र

संदर्भ / पाठ्य पुस्तक

1. भारतीय संस्कृति, डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रंथगार, जोधपुर ।

DShukla 20/2/25

Shivamishra 20/02/2025

20/2/25

Chairman
Board of Studies (BoS)
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.

M.A. (Indian Knowledge System) Sem IV

Course Code	Course Title	L	T	P	C	Sessional		ESE	Total
						ME	IA		
DVS-SEC-421	प्रायोगिक कार्य (Project)	4	0	0	4	20	20	60	100

It will be decided by the course coordinator.

Chairman Board of Studies (DoS) 20/2/2025
Department of Vedic Studies
Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya
Sagar, M.P.
20/2/25

20/2/25

School Board Meeting held on 25 February, 2025

The School Board has approved the minute of meeting of BOS of Department of Vedic Studies h eld on 20/02/2025.

Appeared online

Prof. A.K. Saxena
External Member
Department of Mathematics, Maharaja Chhatrasal University, Chhatarpur (M.P.)

online

Prof. K.S. Varsney
External Member
HoD Physics, D.S. College, Aligarh, U.P.

Online

Prof. Narendra Pandey
External Member
Department of Physics,
University of Lucknow (U.P.)

D Shukla 25/2/25

Prof. Diwakar Shukla
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. Ashish Verma
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. Ranveer Kumar
Member
HoD, Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. U.K. Patil
Member
Department of Pharmaceutical Science,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Prof. R.K. Rawat
Member
Department of Applied Geology,
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/02/25

Dr. Rekha Garg Solanki
Member & Associate Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. U.K. Khedlekar
Member
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Abansal 25/2/25

Dr. Abhishek Bansal
Member & Associate Professor
HoD, Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

Shivani Khare 25/02/25

Dr. Shivani Khare
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Dr. Mahesh Kumar Yadav
Member & Assistant Professor
Department of Mathematics & Statistics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/02/2025

Mr. Kamal Kant Ahirwar
Member
Department of Computer Science & Applications
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25.02.2025

Dr. Maheshwar Panda
Member & Assistant Professor
Department of Physics
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

25/2/25

Prof. R.K. Gangele
Chairman, School Board & Dean, SMPS
Dr. H.S. Gour V.V. Sagar (M.P.)

गणितीय एवं भौतिक विज्ञान अध्ययन शाला
School of Mathematical & Physical Science
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar